



SHRI GAJANAN JAGANNATH MANE

Shri Gajanan Jagannath Mane has been rendering his service to the down trodden community especially in the field of leprosy eradication and rehabilitation of leprosy patients and their families.

2. Born on 14th May 1949, Shri Mane completed his basic education and successfully completed boiler competency examination to help him professionally. He joined Indian Navy at the tender age of 16 inspired by the Indo-China war and sacrifices made in it by the soldiers. He participated in the 1971 India Pakistan war and has been awarded the “Sangram Medal” for his participation in the war.

3. Shri Mane started his work towards leprosy rehabilitation in the year 1991 and till date has been continuing to do so at Kushtha Seva Sanstha, Hanuman Nagar, earlier known as Hanuman Nagar Kushtha Rugna Vasahat, Kalyan. The population of this colony is over 800 residents. He has successfully brought control over spreading of Leprosy disease in the area and cured over 500 patients completely by running an in-house dispensary affiliated to Kalyan Dombivli Municipal Corporation and A.D.H.S. Maharashtra Government. As a part of the rehabilitation program, he has implemented various programs within the colony which have helped the patients and residents of the colony to earn a livelihood, who otherwise find it difficult to get mainstream employment. Some of the notable projects undertaken in the colony include Candle-making, Chalk sticks making, running of a dairy farm etc. In order to ensure that the future generations are self-dependent and are able to get mainstream employment, education up to graduation for children from the colony is ensured by the Sanstha. This is being done with the help of donations received in the Radha Krishna Temple which was built in the premise of the colony in the year 2000. Patients here are given monthly financial support by Kalyan Dombivli Municipal Corporation and Sanjay Gandhi Niradhar Yojna.

4. The rehabilitation center won the first prize for their dairy farm project from Sasakawa Leprosy Foundation, Japan in the year 2011. Patients are taught self-reliance in this colony. Patients and their children are given employment in Kalyan Dombivli Municipal Corporation and private sector. Women are trained for tailoring and tailoring machines are given to them for earning a livelihood. The colony has been able to achieve total control over the spread of this disease.

5. Shri. Mane has been recipient of many awards, such as “Sangram Medal” for participation in 1971 India Pakistan war; Gunwant Kamgar Puraskar in 1993 by Government of Maharashtra; Kushtha Rugna Seva Karya Puraskar by Ex-servicemen Board, Thane District; Kushtha Rugna Seva Puraskar by Kalyan Dombivli Municipal Corporation; Samaj Utthan Puraskar by Government of Maharashtra in 2018 and many more awards from private institutions like Maharashtra Icon, Kokan Bhushan, Adarsh Dombivlikar puraskar etc.



श्री गजानन जगन्नाथ माने

श्री गजानन जगन्नाथ माने दलित समुदाय विशेष रूप से कुष्ठ रोग उन्मूलन और कुष्ठ रोगियों और उनके परिवारों के पुनर्वास के क्षेत्र में सेवा कर रहे हैं।

2. 14 मई 1949 को जन्मे, श्री माने ने अपनी बुनियादी शिक्षा पूरी की और पेशेवर फायदे के लिए बॉयलर योग्यता परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की। वह भारत-चीन युद्ध और सैनिकों के बलिदान से प्रेरित होकर 16 वर्ष की आयु में भारतीय नौसेना में शामिल हो गए। उन्होंने 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भाग लिया जिसके लिए उन्हें "संग्राम पदक" से सम्मानित किया गया है।

3. श्री माने ने कुष्ठ रोग पुनर्वास के लिए वर्ष 1991 में कार्य शुरू किया और इस समय कुष्ठ सेवा संस्था, हनुमान नगर, जिसे पहले हनुमान नगर कुष्ठ रुग्ण वसाहट, कल्याण के नाम से जाना जाता था, में कार्य जारी रखे हुए हैं। इस कॉलोनी में 800 से अधिक लोग रहते हैं। उन्होंने कल्याण डोंबिवली नगर निगम और ए.डी.एच.एस. महाराष्ट्र सरकार से संबद्ध इन-हाउस डिस्पेंसरी चलाकर क्षेत्र में कुष्ठ रोग के प्रसार को सफलतापूर्वक नियंत्रित किया है और 500 से अधिक रोगियों को पूरी तरह से रोगमुक्त कर दिया है। पुनर्वास कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, वह कॉलोनी में विभिन्न कार्यक्रम अमल में लाए हैं, जिनसे उन रोगियों और कॉलोनी के निवासियों को आजीविका कमाने में मदद मिली है, जिन्हें मुख्यधारा वाला रोजगार मिलना मुश्किल होता। कॉलोनी में शुरू की गई कुछ उल्लेखनीय परियोजनाओं में मोमबत्ती बनाना, चॉक स्टिक बनाना, डेयरी फार्म चलाना आदि शामिल हैं। आने वाली पीढ़ियां आत्मनिर्भर और मुख्यधारा वाला रोजगार प्राप्त करने के योग्य बनें, इसलिए संस्था द्वारा कॉलोनी के बच्चों के लिए स्नातक तक की शिक्षा सुनिश्चित की जाती है। यह कार्य वर्ष 2000 में कॉलोनी के परिसर में निर्मित राधा कृष्ण मंदिर के दान के माध्यम से किया जा रहा है। यहां मरीजों को कल्याण डोंबिवली नगर निगम और संजय गांधी निराधार योजना द्वारा मासिक वित्तीय सहायता दी जाती है।

4. पुनर्वास केंद्र ने अपनी डेयरी फार्म परियोजना के लिए वर्ष 2011 का सासाकावा कुष्ठ फाउंडेशन, जापान का प्रथम पुरस्कार जीता। इस कॉलोनी में मरीजों को आत्मनिर्भर बनना सिखाया जाता है। रोगियों और उनके बच्चों को कल्याण डोंबिवली नगर निगम और निजी क्षेत्र में रोजगार दिया जाता है। महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण दिया जाता है और आजीविका कमाने के लिए उन्हें सिलाई मशीनें दी जाती हैं। कॉलोनी, इस बीमारी के प्रसार को पूरी तरह नियंत्रित करने में सफल रही है।

5. श्री माने को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है जिनमें 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भाग लेने के लिए "संग्राम पदक"; 1993 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा गुणवंत कामगार पुरस्कार; पूर्व सैनिक बोर्ड, ठाणे जिले द्वारा कुष्ठ रुग्ण सेवा कार्य पुरस्कार; कल्याण डोंबिवली नगर निगम द्वारा कुष्ठ रुग्ण सेवा पुरस्कार; 2018 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा समाज उत्थान पुरस्कार तथा निजी संस्थानों द्वारा प्रदान किए गए महाराष्ट्र आइकन, कोकन भूषण, आदर्श डोंबिवलीकर पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कार शामिल हैं।